दृष्टि The vision

Test Series–2008

Dated : 20th Sept., 2008

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र-I

Time Allowed : Three Hours **Maximum Marks : 300**

(i) *प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिएँ जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख उत्तर-पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। प्रवेश-पत्र पर उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।*

(ii) *प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं। बाकी प्रश्नों में से प्रत्येक खण्ड से कम से कम 'एक' प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

(iii) *सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड "क"

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखें। 20x3=60

   (क) हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर

   (ख) अमीर खुसरो की खड़ी बोली

   (ग) हिन्दी की वाक्य व्यवस्था

   (घ) पूर्वी हिन्दी व पश्चिमी हिन्दी में अंतर

2. हिन्दी भाषा के इतिहास पर नातिदीर्घ निबंध लिखें। 60

3. मानक भाषा का अर्थ बताते हुए हिन्दी के मानकीकरण की समस्याओं पर विचार करें। 60

4. राजभाषा के रूप में हिन्दी की विफलता के कारणों की पड़ताल करें। 60

खण्ड "ख"

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखें। 20x3=60

   (क) जायसी का रहस्यवाद

   (ख) जनवादी कविता

   (ग) भारतेंदु हरिश्चन्द्र का साहित्यिक योगदान

   (घ) नई समीक्षा

6. आपकी राय में विद्यापति भक्त कवि हैं या शृंगारी? सोदाहरण विश्लेषण करें। 60

7. रीतिकाल के साहित्यिक व सांस्कृतिक महत्व पर विचार करें। 60

8. हिन्दी नाटक व रंगमंच के इतिहास में प्रसाद तथा मोहन राकेश के महत्व पर प्रकाश डालें। 60

(R-2)

दृष्टि
The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ______

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

188/ U.S.

नाम (Name) Indrajeet Mahatha विषय (Subject) Hindi तिथि (Date) 20·09·08

पता (Address) ______ पिन कोड (पोस्टल) ______

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(1)

(b)

अमीर खुसरो आदिकालीन हिन्दी साहित्यिक के प्रमुख हस्ताक्षर हैं जिन्होंने लौकिक साहित्य के संदर्भ में अपनी कलात्मक रचनाशीलता का परिचय दिया। अमीर खुसरो की भाषा में फारसी, ब्रज तथा खड़ी बोली का अद्भुत मिश्रण मिलता है जो उनकी पहेलियों, मुकरियों, दुखनों के माध्यम से दृष्टिगोचर होता है।

खुसरो में खड़ी बोली का स्वरूप आधुनिक खड़ी बोली (19वीं सदी में प्रचलित) के समान प्रतीत होता है। उनकी पहेलियों में आकारान्तता की स्पष्ट प्रवृत्ति दिखाई पड़ता है जो निम्नांकित खुसरो की पहेली के माध्यम से व्यक्त होता है—

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा
चारों ओर फिरे, मोती उससे एक न गिरे

इस प्रकार उपरोक्त पहेली में एकारान्तता की प्रवृत्ति भी

दृष्टि

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

दिखाई पड़ती है। शुक्ल जी ने अमीर खुसरो द्वारा प्रयुक्त खड़ी बोली के संदर्भ में आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा है कि यह अपने समय की पूर्ण आधुनिक परम्परा प्रतीत होती है। अमीर खुसरो के 'दो सुखनों' के अन्तर्गत भी खड़ी बोली का पूर्ण परिपक्व स्वरूप द्रष्टव्य है—

~~पान क्यों सड़ा।~~
~~घोड़ा~~

घोड़ा क्यों अड़ा।
पान क्यों सड़ा।
फेरा न था।

ध्यातव्य है कि अमीर खुसरो जहाँ स्वतंत्र रूप से खड़ी बोली का प्रयोग करते हैं वहीं ब्रज तथा फारसी भाषा के साथ भी मिलाकर के खड़ी बोली का प्रयोग करते हैं जो निम्नांकित उदाहरण में द्रष्टव्य है—

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देस

इस प्रकार खुसरो में खड़ी बोली का स्वतंत्र प्रयोग के साथ-साथ संश्लिष्ट प्रयोग भी दिखता है। ध्यातव्य है कि उस दौर में अन्य

रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं हो पाया था। अतः खुसरो ही वह रचनाकार हैं जिन्होंने खड़ी बोली की काव्यात्मक स्वरूप को पहचानते हुए पहली बार स्वतंत्र प्रयोग किया।

—x—

(13).

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

(अ)

वाक्य व्यवस्था हिन्दी व्याकरण की एक महत्वपूर्ण संरचना है। शब्दों के सार्थक मेल को ही वाक्य कहा जाता है। वाक्य निर्माण की शर्त है कि उसमें प्रयुक्त पदों में स्थान तथा समय का अंतर न हो तथा वह एक सार्थक अर्थ को व्यक्त करे।

संरचना के आधार पर वाक्य को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

① सरल वाक्य - जहाँ केवल एक उद्देश्य तथा एक विधेय हो, जैसे - राम जाता है।

② संयुक्त वाक्य - जहाँ दो उपवाक्यों में समानाधिकरण संबंध हो

जैसे - राम घर गया और मोहन से मिला।

③ मिश्र वाक्य — जहाँ दो वाक्य व्याधिकरण संबंध पर आधारित हों।

उदा- श्याम इतना अधिक पढ़ता है कि सफलता अपरिहार्य है।

सामान्य रूप से प्रकृति के आधार पर भी वाक्य संरचना को आठ भेदों में विभाजित किया जा सकता है —

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604178, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल/E-mail : drishti thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

(i) निषेधवाचक – ~~कहाँ अब जा के~~ राम को यहाँ नहीं जाना चाहिए।
(ii) विधि वाचक – वर्षा हो रही है।
(iii) प्रश्न वाचक – तुम कब आओगे।
(iv) संदेह वाचक – शायद आज वर्षा हो।
(v) आदेशवाचक – खड़े हो जाओ।

(ख) –

हिन्दी व्याकरण में वाक्य में कारक व्यवस्था के आधार पर संज्ञा तथा सर्वनाम का क्रिया के साथ एक निश्चित संबंध स्थापित है। इसी कारण वाक्य संरचना काफी वैज्ञानिक हो जाती है।

संस्कृत में जहाँ कर्ता, कर्म तथा क्रिया के स्थान के संबंध में पर्याप्त लोच है वहीं हिन्दी वाक्य संरचना में तीनों का एक निश्चित संबंध है – कर्ता → कर्म → क्रिया

इस प्रकार हिन्दी वाक्य संरचना काफी परिपक्व तथा वैविध्यपूर्ण है तथा काफी वैज्ञानिक भी है।

——×——

13

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

(2)

हिन्दी भाषा तथा कम्प्यूटर का संबंध वस्तुतः हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक-तकनीकी विकास से जुड़ा है। किसी भी भाषा को मानक तथा व्यापक स्वरूप प्रदान करने हेतु आज वैश्वीकरण के युग में कम्प्यूटर आधारित इन्टरनेट प्रणाली से इसे सहसंबद्ध किया जाना अपरिहार्य बन गया है।

हिन्दी भाषा के कम्प्यूटरीकरण से पूर्व टाइपराइटर तथा फैक्समशीन ने इसके तकनीकी विकास हेतु आधार प्रदान किया। लेकिन कालांतर में हिन्दी की देवनागरी लिपि को कम्प्यूटर में प्रयुक्त करने के उपयुक्त बनाया गया। यूनीकोड के प्रयोग के फलस्वरूप अब हिन्दी के तकनीकी विकास का रास्ता खुल गया है तथा भाषायी साम्राज्यवाद की आशंका भी निरस्त हो गई है।

जहाँ हिन्दी के कई वेबसाइट - उदाहरणार्थ डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.वेब दुनिया.कॉम इत्यादि इंटरनेट पर आ गए हैं वहीं कई व्यक्तियों के निजी ब्लॉग भी अब उपलब्ध हैं तथा यह प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है।

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

लेकिन हिन्दी भाषा तथा कम्प्यूटर का संबंध केवल एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर तक ही सीमित है क्योंकि हिन्दी भाषा में परियोजनाओं को संचालित करने के लिए सिस्टम सॉफ्टवेयर अभी तक विकसित नहीं किया जा सका है। क्योंकि अभी तक यह अंग्रेजी भाषा के लिए बने सिस्टम सॉफ्टवेयर उदाहरणार्थ विण्डोजविस्टा का ही प्रयोग करती है।

इस प्रकार हिन्दी भाषा वैश्वीकरण के युग में आगे बढ़ी है। न्यूयार्क में आयोजित ८वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी इस दिशा में अनेक सुझाव प्रस्तुत किए हैं। स्पष्ट है कि इस दिशा में अभी और भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

15

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27654178, 0-9313988516, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

②

हिन्दी भाषा का विकास संस्कृत से विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में हुआ है। बताता है कि भाषा देश-काल सापेक्ष होती है तथा वह सरलीकरण तथा विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में आगे बढ़ती है। हिन्दी भाषा की विकास यात्रा को भी क्रमशः संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश ~~स्था~~ के पश्चात आरंभिक हिन्दी के रूप में प्रस्थान बिन्दु के रूप में देखा जा सकता है। तत्पश्चात हिन्दी भाषा अपने मध्यकालीन हिन्दी तथा आधुनिक हिन्दी के रूप में प्रस्तुत होती है तथा यह धारा आज भी विकास की ओर अग्रसर होती हुई स्वयं को वैश्वीकरण के अनुकूल बनाने का प्रयत्न कर रही है। इसी संदर्भ में यह कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट से भी जुड़ रही है।

हिन्दी भाषा की इस सम्पूर्ण विकास यात्रा को निम्नलिखित रेखाचित्र के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है जिसमें संस्कृत से उद्भूत होती हुई हिन्दी भाषा सरलीकरण की प्रक्रिया में कम्प्यूटरीकृत हिन्दी तक अपनी विकास प्रक्रिया को बनाए रखी है —

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27658178 8-9313928616, 0-9810316396 ई-मेल/E-mail : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्कृत (~~1500 ई.पू. — 0 ई.~~)

⇓

पाली

⇓

प्राकृत

⇓

अपभ्रंश एवं अवहट्ट

⇓

आरंभिक हिन्दी / पुरानी हिन्दी (1350 ई.–1650 ई.)

⇓

मध्यकालीन हिन्दी (1650 ई. – 1850 ई.)

⇓

आधुनिक हिन्दी (1850 ई. – अद्यतन)

उपर्युक्त आरेख से स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा का विकास एक दीर्घकालीन प्रक्रिया रही है। आदिकालीन हिन्दी साहित्य के संदर्भ में देखा जाए तो आरंभिक / पुरानी हिन्दी के काल में हिन्दी भाषा अपभ्रंश का कैंचुल छोड़कर अपने स्वतंत्र रूप में विकसित हो रही थी। इस दौर में हिन्दी की कई बोलियाँ उदाहरणार्थ - मैथिली, ब्रज, तथा खड़ी बोली भी अपने आरंभिक

दृष्टि The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन 011-27604429, 9213988616, 9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि
The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक अवस्था में थी। इसी दौर में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली का स्वतंत्र प्रयोग किया, तथा अपनी रचनाओं में ब्रज का भी प्रयोग किया। पूर्वी भाषा में विद्यापति ने मैथिली बोली में अपने साहित्य की रचना की जिनके उदाहरण द्रष्टव्य है —

माधव कत तोर करब बड़ाइ
उपमा तोहर कहब ककरा हम
कहितहुँ अधिक लजाइ
(विद्यापति)

गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस
(अमीर खुसरो)

जहाँ तक मध्यकाल का संदर्भ है इस दौर में ब्रज भाषा तथा अवधी भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में अद्भुत विकास हुआ तथा इसी क्रम में हिन्दी भाषा का स्वरूपगत विकास अर्थात् व्याकरण संबंधी विशिष्टताएँ भी स्थापित हुईं। सूरदास के नेतृत्व में अष्टछाप कवियों ने कृष्ण काव्य धारा के अन्तर्गत ब्रज भाषा को शिखर

दृष्टि
The Vision

दृष्टि
The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

तक पहुँचाया तथा रीतिकाल में ब्रज भाषा में अद्भुत कलात्मक क्षमता की धारणीयता देखी गई। दूसरी ओर तुलसी ने रामकाव्य धारा के अंतर्गत अवधी का जबर्दस्त विकास किया। इस काल में दो महाग्रन्थ 'पद्मावत' तथा 'रामचरित मानस' अवधी भाषा में ही लिखे गए। इस दौर में हिन्दी भाषा में कई भाषायी प्रयोग हुए तथा उसकी शब्द संरचना तथा व्याकरणगत संरचना में भी पर्याप्त विकास हुआ।

रीतिकाल के पश्चात् आधुनिक काल का आगमन हुआ। राजनीतिक परिस्थितियों तथा नवजागरण के प्रभाव से अब ब्रज तथा अवधी के ~~स~~ स्थान पर खड़ी बोली का प्रयोग किया जाने लगा। आधुनिक काल के भारतेन्दु युग से लेकर समकालीन कविता तक खड़ी बोली ही प्रयुक्त होती रही तथा इसी दौरान राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा के रूप में भी इसका विकास हुआ। हिन्दी भाषा के मानकीकरण के भी प्रयास 20वीं सदी में द्विवेदी युग से

दृष्टि
The Vision

दृष्टि
The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

आरंभ हुए तथा यह व्यक्तिगत तथा संस्थागत प्रयासों के रूप में सघनीकृत हुई। स्वातंत्र्योत्तर भारत में भारत सरकार के नेतृत्व में हिन्दी भाषा के अंतर्गत, लिपि तथा वर्तनी का मानकीकरण किया गया। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा तथा विधायी विभाग द्वारा पारिभाषिक शब्दावलियों के निर्माण पर जोर दिया गया। 1966-67 में ' देवनागरी के मानक वर्णमाला तथा मानक वर्तनी प्रस्तुत किया गया। 1963 के राजभाषा अधिनियम, 1968 के संसदीय संकल्प के माध्यम से हिन्दी के विकास का प्रयत्न किया गया।

आधुनिक समय में हिन्दी भाषा को इंटरनेट के माध्यम से तकनीकी तथा वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया जा रहा है। यूनीकोड के विकास के पश्चात अब हिन्दी भाषा के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है यद्यपि इस दिशा में हिन्दी को द्वारा अपना

दृष्टि
The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
फोन : 011-27654374, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

सिस्टम सॉफ्टवेयर विकसित किया जाना शेष है।

इस प्रकार हिन्दी भाषा की विकास यात्रा कई बाधाओं तथा अवसरों को पार करती हुए एक दीर्घकालीन भाषिक परम्परा के रूप में स्थापित हो चुकी है - तथा 'भाषा बहता नीर' के कथन को चरितार्थ करती प्रतीत होती है।

———X———

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा का अभिप्राय है – शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा। जब किसी राष्ट्र में भाषा को शासक वर्ग द्वारा प्रशासनिक कार्यों हेतु मान्यता दे दी जाती है तो उसे राजभाषा का दर्जा मिल जाता है।

जहाँ तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है तो यह अपनी दीर्घकालीन भाषिक परम्परा के कारण तथा राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी समन्वयकारी भूमिका के कारण स्वातंत्र्योत्तर भारत में 'राजभाषा' के रूप में स्वीकृत किए जाने की अधिकारिणी थी। इसके लिए स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेताओं गाँधीजी, विजय राघवाचारी, राजगोपालाचारी ने भी हिन्दी को स्वराज से जोड़ा तथा इसे राष्ट्रभाषा के साथ साथ स्वतंत्र भारत की राजभाषा के रूप में भी प्रबल समर्थन दिया।

इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 में भी स्पष्ट उल्लेख किया गया कि

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी तथा इसकी लिपि देवनागरी होगी। साथ ही अनुच्छेद 351 के तहत संघ सरकार पर हिन्दी के विकास की जिम्मेवारी भी सौंपी गई। इस संदर्भ में हिन्दी के विकास हेतु विभिन्न प्रशासनिक, विधायी तथा संस्थागत प्रयास किए गए लेकिन संकीर्ण भाषायी हितों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण और राजनीतिक नेतृत्व में इच्छा शक्ति के अभाव के कारण हिन्दी को वह स्थान नहीं मिल पाया जिसकी वह अधिकारिणी थी।

अतः यह देखना काफी महत्वपूर्ण होगा कि वे कौन सी परिस्थितियाँ थी जिसके कारण हिन्दी व्यावहारिक रूप में राजभाषा के रूप में स्थापित नहीं हो पाई है? इसके कई कारण हैं जिन्हें क्रमवार रूप से देखा जा सकता है-

सर्वप्रथम संविधान के उस उपबंध का उल्लंघन किया गया जिसके अन्तर्गत प्रत्येक 5 वर्ष में राष्ट्रपति द्वारा राजभाषा आयोग बनाने की बात थी। भारत में केवल

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

1955 में ही इस राजभाषा आयोग की स्थापना की गई और इसके बाद इसका लगातार उल्लंघन किया गया। संविधान की इस संस्तुति प्र1950 का उल्लंघन हिन्दी के विकास के मार्ग में बाधक बना।

फिर संसदीय समिति की सिफारिश पर 1960 में जारी राष्ट्रपतीय आदेशों का लगातार उल्लंघन किया गया। हिन्दी प्रशिक्षण के बावजूद सरकारी कर्मचारियों को अंग्रेजी में ही काम करने की छूट दी गई तथा हिन्दी में कार्यकरण को बाध्यकारी बनाने का प्रयास नहीं किया गया। इस कारण भी हिन्दी भाषा प्रशासन में प्रयुक्त नहीं हो पाई।

फिर संविधान में यह स्पष्ट उल्लेख था कि 1965 के पश्चात अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी प्रशासन की भाषा होगी लेकिन गैर हिन्दी भाषी राज्यों तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल के हिन्दी विरोध के कारण सरकार ने जल्दबाजी में राजभाषा

दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27654138, 9311398616, 9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

अधिनियम 1963 पारित कर दिया तथा यह उपबंध कर दिया गया कि गैर हिन्दी भाषियों की सहमति के पश्चात ही हिन्दी को राज भाषा बनाया जाएगा। निश्चय ही सरकार ने अदूरदर्शिता का परिचय देते हुए जल्दबाजी में यह कदम उठाया तथा हिन्दी के राजभाषा के रूप में विकास को अवरुद्ध कर दिया।

संसद द्वारा 1968 में पारित संकल्प के द्वारा हिन्दी के विकास का प्रयत्न अवश्य किया गया लेकिन यह भी अपर्याप्त सिद्ध हुआ है। केन्द्रीय हिन्दी समिति जिसके अध्यक्ष स्वयं प्रधान मंत्री हैं, की बैठकें संचालित नहीं की जाती हैं, साथ ही मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन राजभाषा आयोग के निर्देशों को भी बाध्यकारी बनाने की व्यवस्था नहीं की गई है, फलत: ये निर्देश विभिन्न प्रशासनिक कार्यालयों के लिए प्रभावी नहीं हो पाते हैं।

—

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27654128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल(E-mail) : drishti thevision@rediffmail.com

फिर यद्यपि विधायी आयोग तथा वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन से अनुवाद कार्य किया जा रहा है लेकिन ये काफी दुरूह शब्दों का निर्माण करते हैं तथा इनकी प्रगति भी धीमी प्रतीत होती है।

दूसरी ओर सरकार की राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण 'त्रिभाषा फार्मूला' को भी लागू नहीं किया जा सका है जिसके कारण अन्य भाषा के समर्थकों में हिन्दी की श्रेष्ठता का भय व्याप्त रहता है।

उपरोक्त कारणों से हिन्दी भाषा अपने अपेक्षित स्थान को नहीं प्राप्त कर पाई है। इसके बावजूद हिन्दी भाषा अपनी जीवंतता तथा वैज्ञानिकता के कारण लगातार वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करने में सफल हो रही है। इस दिशा में सरकार द्वारा अपेक्षित कार्य किया जाना

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604178, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti thevision@rediffmail

चाहिए। अनुसंधान तथा विकास के द्वारा हिन्दी में स्वयं का सिस्टम सॉफ्टवेयर विकसित करने की जरूरत है। अतः हमें नहीं भूलना चाहिए कि 'न्यूयार्क हिन्दी सम्मेलन (2007) में संयुक्त राष्ट्र महासचिव बानकी मून ने भी हिन्दी में ही संबोधन किया था। अन्ततः हिन्दी को उसका यथोचित व अपेक्षित स्थान दिलाने हेतु सरकार को स्वयं आगे आना होगा।

—x—

37

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
इस पृष्ठ पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(6)

(ख)

जनवादी कविता आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में समकालीन कविता का ही एक अंग है जिसका विकास 1970 के दशक की राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में हुआ। इस काव्यधारा के प्रतिनिधि रचनाकार में धूमिल, नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, इत्यादि आते हैं।

जनवादी कविता मूलतः प्रगतिवाद की ही आगामी धारा है, लेकिन यह प्रगतिवाद की तरह वैचारिक रूढ़िकता तथा पार्टी के प्रति प्रतिबद्धता में नहीं वरन् स्वयं के अनुभवों की जीवंतता को एवं भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों को काव्य-चेतना का आधार बनाते हैं। वे जीवन की व्याख्या द्वारा समानता की खोज करते हैं तथा मानवतावाद की स्थापना करते हैं जैसा कि स्पष्ट है —

हम जीवन के आख्यकार हैं
हम कवि हैं जनवादी।

जनवादी कविता की केन्द्रीय चेतना राजनीतिक विद्रूपताओं को उजागर करना है जो राष्ट्रीय आपातकाल के विरोध में अभिव्यक्त हुई है। नागार्जुन, धूमिल तथा त्रिलोचन ने राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा संसद व लोकतंत्र की विसंगतियों पर चोट करते हुए कहा है —

अपने यहाँ लोकतंत्र एक तमाशा है
जिसकी जान मदारी की भाषा है।
(धूमिल)

फिर जनवादी कविता स्वकीया तथा स्वस्थ प्रेम में विश्वास करते हैं तथा कहते हैं —

मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्रेम तुम्हारा
(त्रिलोचन)

जनवादी कवि सपाटता तथा अभिधात्मकता के आवरण से बाहर निकलकर व्यंजनात्मकता को धारण करते हैं तथा प्रगतिवादी मान्यता का इस बिन्दु पर अतिक्रमण करते हैं।

इनका शिल्प लोक बिंब, लोक प्रतीकों को धारण करता है। ये राष्ट्र की पारम्परिक गौरव बोध तथा आजादी की प्रासंगिकता का विरोध करते हैं जैसा कि नागार्जुन की पंक्ति से स्पष्ट है —

~~देश वह कैसा~~

जहाँ न भरता पेट!
देश वह कैसा भी हो
महानरक है।

(13)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष —011-27604178, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail): drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

(51)

भारतेन्दु हरिश्चंद्र आधुनिक काल के हिन्दी कविता के भारतेन्दु युग के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। भारतेन्दु के साहित्यिक रचनाकर्म के भूगोल का विस्तार कई आयामों में विस्तृत है, जो नाटक, निबंध, आलोचना, कविता इत्यादि के संदर्भ में है।

भारतेन्दु ने हिन्दी नाटकों के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया तथा इनके माध्यम से नवजागरण की चेतना को अभिव्यक्त किया। 'भारत दुर्दशा' 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' आदि नाटकों द्वारा भारतेन्दु ने आत्म मूल्यांकन तथा आत्म विकास की चेतना का संचार भारतीयों में किया। साथ ही उन्होंने अपने नाटकों को रंगमंच से जीवंतता के साथ जोड़ा। नाटकों की अभिनेयता की दृष्टि से भारतेन्दु के नाटक अभूतपूर्व हैं। इसी नवजागरण की केन्द्रीय चेतना का विस्तार प्रसाद के नाटकों में दिखता है तथा भारतेन्दु की रंगमंचीयता, मोहन राकेश के नाटकों में परिपक्व रूप धारण करती है।

दृष्टि The Vision

कविताओं के क्षेत्र में भारतेन्दु के नेतृत्व में भारतेन्दु मण्डल ने भी अविस्मरणीय योगदान दिया। इन्होंने गद्य के क्षेत्र में हिन्दी भाषा की खड़ी बोली को लोकप्रिय बनाया तथा इन्हीं की रचनाओं के कारण खड़ी बोली में वह गुण परिपक्व हो पाया जिसके फलस्वरूप वह संश्लिष्टता को धारण करने में सफल हो सकी।

पुनः 'नाटक' नामक निबंध में भी भारतेन्दु ने सैद्धांतिक समीक्षा के प्रतिमान स्थापित किए। पुनः हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भारतेन्दु का योगदान अप्रतिम है जो 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन' तथा 'कविवचनसुधा' के रूप में प्रकाशित होती थी।

इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र का हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके द्वारा स्थापित भाषिक परम्परा सम्पूर्ण आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य का आधार बनकर उभरी।

—— X ——

(13)

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

⑦

नई समीक्षा आंदोलन हिन्दी समीक्षा के प्रमुख धाराओं में से एक है जिसे धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना इत्यादि के नेतृत्व में संचालित किया गया।

नई समीक्षा आंदोलन वस्तुत: प्रगतिवादी समीक्षा की वैचारिक स्थूलता तथा मनोवैज्ञानिक समीक्षा की जटिलता का एक साथ प्रतिकार करती है।

नई समीक्षा किसी भी साहित्यिक रचना को मूलत: भाषिक संरचना मानती है तथा प्रगतिवादी समीक्षा के विपरीत कथ्य की तुलना में शिल्प को ज्यादा महत्वपूर्ण मानती है। उनके अनुसार शिल्प ही वह संरचना है जो साहित्य की विभिन्न विधाओं में अन्तर निर्धारित करती है। इस प्रकार नई समीक्षा शिल्पगत विधान को केन्द्रीयता प्रदान करती है।

नई समीक्षा के सिद्धांतकारों का मत है कि साहित्यिक रचना का उद्देश्य

समाज या व्यक्ति को बदलना नहीं है, बल्कि यह अधिक-से-अधिक व्यक्ति को संस्कारित कर सकती है।

नई समीक्षा का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव वैविध्य के कारण, किसी रचना को विचारधारा की जड़ता में बांधा नहीं जा सकता है। अतः ये अनुभूति की प्रामाणिकता को रचना का विषय वस्तु बनाते हैं।

नई समीक्षा आंदोलन को व्यावहारिक आयाम देने में धर्मवीर भारती, अज्ञेय, नरेश मेहता, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

इस प्रकार नई समीक्षा आंदोलन नवलेखन के दौर का समीक्षा आंदोलन है जो कथ्य तथा शिल्प के मध्य उचित संबंधों की पड़ताल करती है तथा अन्ततः कविता या रचना में शिल्प की केन्द्रीयता को स्वीकार करती है।

17

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

⑦

रीतिकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल तथा भक्तिकाल के पश्चात् विकसित हुआ। अपनी निरंतरता एवं परिवर्तन की परम्परा में हिन्दी साहित्य के विकास के तृतीय चरण के रूप में रीतिकाल अपने साहित्यिक तथा सांस्कृतिक योगदान के कारण महत्वपूर्ण है। सामान्यतः रीतिकाल 1650 ई. से 1850 ई. तक माना जाता है तथा इस काल में रीतिकाव्य, रीतिबद्ध काव्य, रीतिमुक्त काव्य के रूप में कई परम्पराएं विकसित हुई, साथ-ही साथ रीतिइतर काव्य की धर्म संबंधी साहित्य, नीतिकाव्य एवं वीरकाव्य ने भी इसके साहित्यिक - सांस्कृतिक स्वरूप को स्पष्ट किया।

आचार्य शुक्ल के अनुसार

'साहित्य जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिंब होता है तथा जनता की धार्मिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक तथा सामाजिक चित्तवृत्तियों में परिवर्तन के साथ साहित्य अपने पुराने केंचुल को छोड़ नए रूप में सामने आता है। रीतिकाल में प्रयुक्त काव्यचेतना तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण तत्कालीन जनता की चित्तवृत्तियों का

दृष्टि The Vision
दृष्टि The Vision

ही समन्वित प्रतिबिंब है। इसी संदर्भ में इनके सामाजिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक योगदान को देखा जाना चाहिए।

रीतिकाल की रीतिकाव्य तथा रीतिबद्ध धारा का मुख्य योगदान लक्षण ग्रंथ परम्परा के रूप में देखा जा सकता है। संस्कृत के कठिन ग्रंथों में निहित ज्ञान को सरल भाषा में प्रस्तुत कर इन कवियों ने शास्त्र को लोक के समक्ष उपस्थित किया। इसी संदर्भ में इन कवियों को कुछ समीक्षकों ने आचार्य भी कहा है।

रीतिकाल में बिहारी, केशवदास ने कविता के कथ्य तथा शिल्प को भी गुणात्मक रूप से प्रस्तुत किया। केशवदास के रामचंद्रिका की संवाद योजना आज भी साहित्यिक प्रतिमान के रूप में है। बिहारी ने भी आमजनता को अपने कथ्य का केन्द्रीय विषय बनाया जब वे कहते हैं —

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं नैननु ही सौं बात।

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ आम जनता को नायकत्व प्रदान किया जाना नायकों में आभिजात्यता से मुक्ति का तथा लोक की ओर उन्मुखता का परिचायक है।

रीतिमुक्त काव्य धारा के घनानंद ने 'प्रेम' को अपनी संवेदना का केन्द्रीय विषय बनाया। वे 'प्रेम के पीर' कहे जाते हैं। उनका प्रेम एकनिष्ठ तथा समर्पित है तथा यही संवेदना हिन्दी साहित्य की आगामी साहित्यिक धाराओं में परिलक्षित होती है। घनानंद की 'प्रेम' की केन्द्रीयता निम्न पंक्ति में प्रकट है —

"यह अति सूधो स्नेह को मारग है।"

रीतिइतर काव्य धाराओं के अंतर्गत वीरता तथा नीति को पहली बार स्वतंत्र काव्य के रूप में स्थापित किया गया। रीतिकाल की इस धारा में वर्णित वीरता रासो साहित्य की वीरता की तरह देहमूलक सौन्दर्य की प्राप्ति पर आधारित नहीं है वरन देश की मुक्ति की आकांक्षा से प्रेरित है। यही आक्रोश भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत रही है जो निम्नांकित पंक्तियों से स्पष्ट होती है —

दृष्टि
The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

कान्ह जिमि कंस पर
त्यों म्लेच्छ वंश पर
सेर शिवराज हैं।

नीतिकाव्य भी वृंद के दोहों के रूप में पहली बार स्वतंत्र रूप में आया जिसमें लोकजीवन के व्यावहारिक अनुभवों को नीति कथन के रूप में साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया गया —

"सबै सहाय सबल के, कोऊ न निबल सहाय
पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय।"

फिर रीतिकाल में ब्रज भाषा का अभूतपूर्व विकास हुआ तथा उसमें निहित कलात्मकता को उभारा गया। इस दौर में ब्रज भाषा का सम्पूर्ण उत्तर भारत में प्रसार हुआ तथा यह एक व्यापक काव्य भाषा बन कर उभरी। इस काल में बिहारी के दोहों की कलात्मकता के माध्यम उर्दू के शायरी परम्परा को भी चुनौती मिली जो कि एक अभूतपूर्व साहित्यिक योगदान है।

दृष्टि
The Vision

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष :-011-27604176, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishti_thevision@rediffmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

रीतिकाल में साहित्य को आलंकरण तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, संगीत, चित्रकला आदि से जोड़ा गया। इन ललित कलाओं की भारत में लंबी परम्परा रही है तथा इस परम्परा का साहित्य में समावेशन कर रीतिकाल के कवियों ने भारत की सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षण ही प्रदान किया है।

इसप्रकार रीतिकाल हिन्दी साहित्यिक विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है जिसने युगीन चित्तवृत्तियों के अनुरूप में शिल्प व संवेदना में परिवर्तन करते हुए वैविध्यगत काव्य धाराओं को जन्म दिया। इन चुनौतियों की स्वीकृति से उत्पन्न उपलब्धियों एवं कमियों के साथ रीतिकाल हिन्दी साहित्य तथा संस्कृति के प्रतिबिंबन के संदर्भ में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

— X —

36 marks